नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 334, नई दिल्ली, सोमवार 02 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

03 अंकशास्त्र में पिनेकल्स (Pinnacles) और चैलेंजेस (Challenges) | 06 युवा बजट 2026-27 के आर्थिक मायने विशिष्ट, विकसित भारत 2047 के सपने होंगे | 08 [illegible]

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा "टीचर्स ऑफ बिहार"
संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

परिवहन विशेषन्यूज

पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है।

टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के ज़रिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।

डिजिटल संवाद से बढ़ी भागीदारी....

मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है।

सम्मान से अधिक सशक्तिकरण पर जोर....

टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है।

मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका....

शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की संभावनाएँ....

शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों के विचार....

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है।

वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष....

कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की जागरूक भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। यह मंच शिक्षकों को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सोचने, बोलने और बदलाव का नेतृत्व करने का अवसर दे रहा है।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को निरंतर समर्थन और सकारात्मक दिशा मिलती रही, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था आने वाले वर्षों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के नए मानक स्थापित कर सकती है।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है, जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

हिन्दी दैनिक अखबार

डिजिटल राष्ट्रीय डेली न्यूज़ ई-पेपर छपरा (बिहार) एवं सीतापुर (यूपी) से प्रकाशित।

अम्बालिका न्यूज़

छपरा, सोमवार, 02 फरवरी 2026 वर्ष : 1, अंक : 382 पृष्ठ : 4 मूल्य : नि:शुल्क web : www.ambalikanews.com Email : ambalikanews2025@gmail.com

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा टीचर्स ऑफ बिहार

पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है। टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के जरिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं। मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्-

ाक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है। टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्-ाक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है। शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है। शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं। टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सका-रात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है। कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की जागरूक भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। यह मंच शिक्षकों को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सोचने, बोलने और बदलाव का नेतृत्व करने का अवसर दे रहा है। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को निरंतर समर्थन और सकारात्मक दिशा मिलती रही, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था आने वाले वर्षों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के नए मानक स्थापित कर सकती है। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है, जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

वर्ष : 14, अंक : 31, पृष्ठ : 12 नई दिल्ली : मूल्य : 5 रुपया सोमवार 02 फरवरी, 2026

जनमत की पुकार

मुख्य संपादक : आरके अग्रवाल (महासचिव, नवयुवक पत्रकार संघ) मो. 9990475033

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

@janmatkipukar Janmat Ki Pukar janmatmediagroup@gmail.com

प्रसार: दिल्ली एवं एनसीआर, बिहार, उत्तर प्रदेश, मुंबई, कोलकाता, झारखंड, राजस्थान

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा "टीचर्स ऑफ बिहार"

संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

पटना, प्रतिनिधि। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है।

टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के जरिए न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।

डिजिटल संवाद से बढ़ी भागीदारी.... मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएं और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है।

टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है।

मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका.... : शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है।

शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहां शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है।

वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की जागरूक भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। यह मंच शिक्षकों को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सोचने, बोलने और बदलाव का नेतृत्व करने का अवसर दे रहा है।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को निरंतर समर्थन और सकारात्मक दिशा मिलती रही, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था आने वाले वर्षों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के नए मानक स्थापित कर सकती है।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है, जहां शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

✱ बिहार-झारखंड का अपना अखबार

नवबिहार टाइम्स

✱ पटना संस्करण

अपना प्रदेश, अपनी बात

✱ रजि. नंबर : 52290/90 ✱ वर्ष : 36 ✱ अंक : 246 ✱ पृष्ठ : 12 ✱ औरंगाबाद, सोमवार, 2 फरवरी 2026 ✱ मूल्य : 3.00 रुपये ✱ औरंगाबाद एवं बोकारो से प्रकाशित ✱ www.navbihartime.com

लोकसभा में बजट भाषण पढ़तीं केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा 'टीचर्स ऑफ बिहार'

संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

नवबिहार टाइम्स ब्यूरो

पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है। टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के जरिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं। मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएं और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं।

इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है। टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

दैनिक
हर्ष उजाला
राष्ट्रहित में सबसे ऊपर | हर खबर सटीक

वर्षः 02, अंकः 336 | मूल्यः 2 रू., पृष्ठः 14 | ग्वालियर, सोमवार 02 फरवरी 2026 | RNI No. MPHIN/2024/89815

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा टीचर्स ऑफ बिहार

पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है।

टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के ज़रिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।

डिजिटल संवाद से बढ़ी भागीदारी-मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं।शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है।

सम्मान से अधिक सशक्तिकरण पर ज़ोर-टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है।मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका-शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है।

बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल एवं उत्तर प्रदेश में एक साथ प्रसारित
ISSN 2582-4813
सीमांचल उदय
RNI No. : BIHHIN/2018/77310
राष्ट्रीय संध्या हिन्दी दैनिक डिजिटल
पूर्णिया/पटना 01 फरवरी 2026 (रविवार) वर्ष : 03 अंक : 180 www.simanchaluday.com मूल्य : 5 मात्र

बिहार की शिक्षा में उभरती नई आवाज़ : 'टीचर्स ऑफ बिहार' संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण और शैक्षणिक संवाद का मंच

सीमांचल उदय प्रतिनिधि

पटना। बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान एक शांत लेकिन असरदार बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव न तो किसी सरकारी आदेश से आया है और न ही किसी बड़े संस्थागत ढांचे से, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, वैचारिक चेतना और आपसी संवाद से जन्मा है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षा संवाद को नई दिशा दी है।

टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों को केवल कक्षा-कक्ष और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार, शिक्षक अधिकार और विद्यालयी चुनौतियों पर खुलकर विचार रखने का मंच प्रदान किया है। यह मंच धीरे-धीरे एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम बना संवाद की रीढ़ : टीचर्स ऑफ बिहार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी डिजिटल सक्रियता है। ऑनलाइन बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार-आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण इलाकों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और व्यावहारिक बना रही है।

सम्मान नहीं, सशक्तिकरण पर फोकस : यह मंच औपचारिक सम्मान, पुरस्कार या पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का स्पष्ट मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान मंचों पर नहीं, बल्कि कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में दिखाई देता है।

नीतिगत मुद्दों पर भी मुखर भूमिका : टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधारों पर समय-समय पर अपनी राय सार्वजनिक की है। इससे यह मंच केवल संवाद तक सीमित न रहकर शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ : शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक और सकारात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सार्थक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों की राय : टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार और टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष : कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि जागरूक शिक्षकों की भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। आज टीचर्स ऑफ बिहार एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है—जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

बिहार की शिक्षा में उभरती नई आवाज़ : 'टीचर्स ऑफ बिहार'

अमर गाथा

पटना। बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान एक शांत लेकिन असरदार बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव न तो किसी सरकारी आदेश से आया है और न ही किसी बड़े संस्थागत ढांचे से, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, वैचारिक चेतना और आपसी संवाद से जन्मा है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षा संवाद को नई दिशा दी है। टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों को केवल कक्षा-कक्ष और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार, शिक्षक अधिकार और विद्यालयी चुनौतियों पर खुलकर विचार रखने का मंच प्रदान किया है। यह मंच धीरे-धीरे एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम बना संवाद की रीढ़- टीचर्स ऑफ बिहार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी डिजिटल सक्रियता है। ऑनलाइन बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार-आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण इलाकों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और व्यावहारिक बना रही है।

सम्मान नहीं, सशक्तिकरण पर फोकस यह मंच औपचारिक सम्मान, पुरस्कार या पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का स्पष्ट मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान मंचों पर नहीं, बल्कि कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में दिखाई देता है।

नीतिगत मुद्दों पर भी मुखर भूमिका- टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधारों पर समय-समय पर अपनी राय सार्वजनिक की है। इससे यह मंच केवल संवाद तक सीमित न रहकर शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ- शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक और सकारात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सार्थक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं।

» संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण और शैक्षणिक संवाद का मंच

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों की राय- टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार और टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष- कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि जागरूक शिक्षकों की भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। आज टीचर्स ऑफ बिहार एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है—जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

बिहार की शिक्षा में उभरती नई आवाज़ : 'टीचर्स ऑफ बिहार'

कैलांचल टाइम्स

पटना। बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान एक शांत लेकिन असरदार बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव न तो किसी सरकारी आदेश से आया है और न ही किसी बड़े संस्थागत ढांचे से, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, वैचारिक चेतना और आपसी संवाद से जन्मा है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षा संवाद को नई दिशा दी है। टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों को केवल कक्षा-कक्ष और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार, शिक्षक अधिकार और विद्यालयी चुनौतियों पर खुलकर विचार रखने का मंच प्रदान किया है। यह मंच धीरे-धीरे एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम बना संवाद की रीढ़: टीचर्स ऑफ बिहार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी डिजिटल सक्रियता है।

ऑनलाइन बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार-आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण इलाकों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और व्यावहारिक बना रही है।

सम्मान नहीं, सशक्तिकरण पर फोकस: यह मंच औपचारिक सम्मान, पुरस्कार या पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का स्पष्ट मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान मंचों पर नहीं, बल्कि कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के

◆ संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण और शैक्षणिक संवाद का मंच

सीखने के स्तर में दिखाई देता है।

नीतिगत मुद्दों पर भी मुखर भूमिका: टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधारों पर समय-समय पर अपनी राय सार्वजनिक की है। इससे यह मंच केवल संवाद तक सीमित न रहकर शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ: शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक और सकारात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सार्थक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों की राय: टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार और टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष: कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि जागरूक शिक्षकों की भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। आज टीचर्स ऑफ बिहार एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है—जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

आपकी आवाज़ NEWS LIVE
तेज खबर, तेज असर
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक बुलेटिन
बिह

बिहार की शिक्षा में उभरती नई आवाज : टीचर्स ऑफ बिहार

संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण और शैक्षणिक संवाद का मंच

पटना। बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान एक शांत लेकिन असरदार बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव न तो किसी सरकारी आदेश से आया है और न ही किसी बड़े संस्थागत ढांचे से, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, वैचारिक चेतना और आपसी संवाद से जन्मा है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षा संवाद को नई दिशा दी है।

टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों को केवल कक्षा-कक्ष और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार, शिक्षक अधिकार और विद्यालयी चुनौतियों पर खुलकर विचार रखने का मंच प्रदान किया है। यह मंच धीरे-धीरे एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम बना संवाद की रीढ़

टीचर्स ऑफ बिहार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी डिजिटल सक्रियता है। ऑनलाइन बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार-आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण इलाकों में कार्यरत

शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और व्यावहारिक बना रही है।

सम्मान नहीं, सशक्तिकरण पर फोकस

यह मंच औपचारिक सम्मान, पुरस्कार या पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का स्पष्ट मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान मंचों पर नहीं, बल्कि कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में दिखाई देता है।

नीतिगत मुद्दों पर भी मुखर भूमिका

टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधारों पर समय-समय पर अपनी राय सार्वजनिक की है। इससे यह मंच केवल संवाद तक सीमित न रहकर शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ

शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक और सकारात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सार्थक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों की राय

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार और टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है।

वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि जागरूक शिक्षकों की भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। आज टीचर्स ऑफ बिहार एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है–जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

बिहार की शिक्षा में उभरती नई आवाज : टीचर्स ऑफ बिहार

पटना। बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान एक शांत लेकिन असरदार बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव न तो किसी सरकारी आदेश से आया है और न ही किसी बड़े संस्थागत ढांचे से, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, वैचारिक चेतना और आपसी संवाद से जन्मा है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षा संवाद को नई दिशा दी है। टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों को केवल कक्षा-कक्ष और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार, शिक्षक अधिकार और विद्यालयी चुनौतियों पर खुलकर विचार रखने का मंच प्रदान किया है। यह मंच धीरे-धीरे एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम बना संवाद की रीढ़ : टीचर्स ऑफ बिहार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी डिजिटल सक्रियता है। ऑनलाइन

बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार-आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण इलाकों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और व्यावहारिक बना रही है।

सम्मान नहीं, सशक्तिकरण पर फोकस : यह मंच औपचारिक सम्मान, पुरस्कार या पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का स्पष्ट मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान मंचों पर नहीं, बल्कि कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में दिखाई देता है।

नीतिगत मुद्दों पर भी मुखर भूमिका : टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधारों पर समय-समय पर अपनी राय सार्वजनिक की है। इससे यह मंच केवल संवाद तक सीमित न रहकर शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ : शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक और सकारात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सार्थक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

BORDERNEWSMIRROR BNM to the point...
bordernewsmirror.com
02 Feb 2026 - Page 3

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा "टीचर्स ऑफ बिहार"

बीएनएम @ मोतिहारी @ श्रीनिवास कुमार

बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में हाल के वर्षों में शिक्षकों की भूमिका केवल अध्यापन तक सीमित न रहकर वैचारिक सहभागिता और नवाचार की ओर बढ़ी है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक प्रभावी मंच के रूप में सामने आया है, जो शिक्षकों को शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा अवसर प्रदान कर रहा है। टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। इस मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के जरिए अपने शैक्षणिक नवाचार साझा कर रहे हैं और साथ ही सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर गंभीर तथा सार्थक विमर्श भी कर रहे हैं। ऑनलाइन बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है। इस मंच की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह औपचारिक सम्मान या पुरस्कार से अधिक शिक्षक सशक्तिकरण, व्यावसायिक गरिमा और कार्य की गुणवत्ता पर जोर देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है। इसके साथ ही शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार जैसे विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय- समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है, जिससे यह मंच शिक्षक समुदाय और नीति-निर्माताओं के बीच संवाद की एक सशक्त कड़ी बनता जा रहा है। टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार और टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार के अनुसार, यह मंच निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है। शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक- आधारित मंचों को निरंतर रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन संभव है। आज टीचर्स ऑफ बिहार एक संगठन भर नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा विचार बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं बल्कि बदलाव के सक्रिय सूत्रधार हैं।

शिक्षा क्रांतिः संगठन नहीं, 'विचार' बना टीचर्स ऑफ बिहार

आंदोलन न्यूज, पटनाः बिहार की शिक्षा व्यवस्था में 'टीचर्स ऑफ बिहार' एक सशक्त मंच के रूप में उभरा है। डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर यह मंच शिक्षकों को नवाचार और नीतिगत संवाद से जोड़ रहा है। फाउंडर शिव कुमार और ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने कहा कि यह संगठन पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक सशक्तिकरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक साझा संकल्प बन चुका है।

वर्ष- 3 , अंक- 70
छपरा
2 फरवरी सोमवार
2026
पृष्ठ - 04

दैनिक खोजखबर
खबरों की सच्चाई से रू-ब-रू

E-mail : dainikkhojkhabar@gmail.com
E-Paper
website : www.dainikkhojkhabar.live

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा टीचर्स ऑफ बिहार

दैनिक खोज खबर/पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है। टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के ज़रिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं। मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं।

चंपारण की धड़कन, देश की पहचान। RNI NO-BIHHIN/2022/89222

www.champarankesari.com

Email: champarnkeshari@gmail.com

चम्पारण केसरी

पूर्वी चम्पारण
2 फरवरी 2026
वर्ष : 4, अंक :199
सोमवार
पृष्ठ संख्या : 08
मूल्य: 2 रुपए

संक्षिप्त समाचार

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा टीचर्स ऑफ बिहार
संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

मोतिहारी। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है।टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के ज़रिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं।शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है।टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है।मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

बिहार की शिक्षा में उभरती नई आवाज़ : 'टीचर्स ऑफ बिहार'

संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण और शैक्षणिक संवाद का मंच

पटना। बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान एक शांत लेकिन असरदार बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव न तो किसी सरकारी आदेश से आया है और न ही किसी बड़े संस्थागत ढांचे से, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, वैचारिक चेतना और आपसी संवाद से जन्मा है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षा संवाद को नई दिशा दी है। टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों को केवल कक्षा-कक्ष और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार, शिक्षक अधिकार और विद्यालयी चुनौतियों पर खुलकर विचार रखने का मंच प्रदान किया है। यह मंच धीरे-धीरे एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम बना संवाद की रीढ़ टीचर्स ऑफ बिहार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी डिजिटल सक्रियता है। ऑनलाइन बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार-आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण इलाकों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता

शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और व्यावहारिक बना रही है।

सम्मान नहीं, सशक्तिकरण पर फोकस यह मंच औपचारिक सम्मान, पुरस्कार या पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का स्पष्ट मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान मंचों पर नहीं, बल्कि कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में दिखाई देता है।

नीतिगत मुद्दों पर भी मुखर भूमिका टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधारों पर समय-समय पर अपनी राय सार्वजनिक की है। इससे यह मंच केवल संवाद तक सीमित न रहकर शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक और सकारात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सार्थक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों की राय टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार और टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि जागरूक शिक्षकों की भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है।

आज टीचर्स ऑफ बिहार एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है—जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
तरुणमित्र
श्रम ही आधार, सिर्फ खबरों से सरोकार
www.youtube.com/TarunmitraGroup
पटना
वर्ष: 24 अंक 274
सोमवार 02 फरवरी, 2026
तापमान अधिकतम 25°C न्यूनतम 14°C
मूल्य 3 रुपए पृष्ठ-08 बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र से प्रकाशित www.tarunmitra.in

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा 'टीचर्स ऑफ बिहार'

पत्रकार नगर, 01 फरवरी (तरुणमित्र)। पटना में राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है।

टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के जरिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है। टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है। शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है।शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं। टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है।

मुजफ्फरपुर हिन्दी साप्ताहिक

मौर्य ध्वज एक्सप्रेस

खबरों का संसार

RNI NO:- BIHHIN/2017/74970

02 फरवरी 2026 (विशेषांक) मुजफ्फरपुर | वर्ष -9 अंक-04 | मूल्य- रु. 2/- कुल पृष्ठ-8

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा टीचर्स ऑफ बिहार

संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

डॉ.बिपिन बिहारी मौर्य, को-ऑर्डिनेटर मौर्य ध्वज एक्सप्रेस, बिहार।

पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है। टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के जरिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं। डिजिटल संवाद से बढ़ी भागीदारी.... मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है। सम्मान से अधिक सशक्तिकरण पर जोर.... टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है। नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका.... शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है। भविष्य की संभावनाएँ.... शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं। पदाधिकारियों के विचार.... टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक

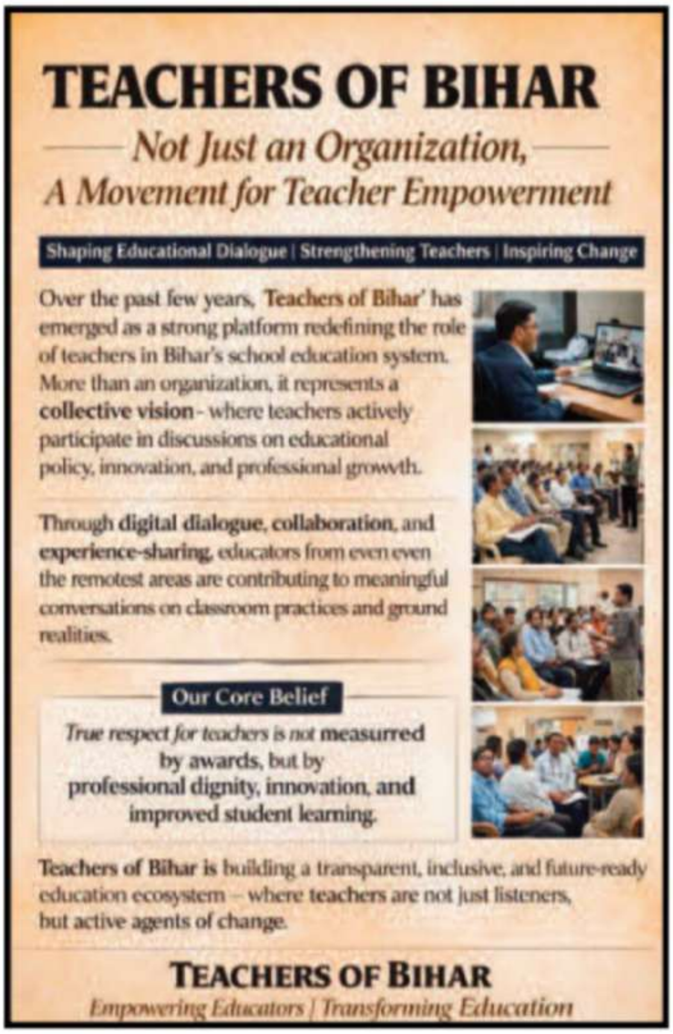

मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है। निष्कर्ष.... कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की जागरूक भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। यह मंच शिक्षकों को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सोचने, बोलने और बदलाव का नेतृत्व करने का अवसर दे रहा है। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को निरंतर समर्थन और सकारात्मक दिशा मिलती रही, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था आने वाले वर्षों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के नए मानक स्थापित कर सकती है। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है, जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

प्रदेश का निर्भीक समाचार पत्र
विदिशा जागरण

सुविचार
■ इरादे मज़बूत होने चाइए कोई भी कार्य आप पूर्ण कर सकते है।

प्रधान संपादक : आर. के. वासुदेव (बॉस) भोपाल, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, सागर से प्रसारित प्रबंध संपादक - योगेंद्र वासुदेव, स्थानीय संपादक - के. के. अथार्य
Email : rkstudio.vds@gmail.com ■ वर्ष : 08, अंक : 179, मूल्य 2 रू., पृष्ठः 8 ■ विदिशा, सोमवार 02 फरवरी - 2026 सह संपादक : राकेश कुमार विश्वकर्मा

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा टीचर्स ऑफ बिहार

संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

विदिशा जागरण पटना ।

पटना राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है।

टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के ज़रिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।

डिजिटल संवाद से बढ़ी भागीदारी....:

मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है।

सम्मान से अधिक सशक्तिकरण पर ज़ोर....: टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है।

मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका....

: शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की संभावनाएँ....:

शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन

के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों के विचार....:

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष....

टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की जागरूक भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। यह मंच शिक्षकों को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सोचने, बोलने और बदलाव का नेतृत्व करने का अवसर दे रहा है।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को निरंतर समर्थन और सकारात्मक दिशा मिलती रही, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था आने वाले वर्षों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के नए मानक स्थापित कर सकती है।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है, जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं ।

वर्ष : 22 अंक : 203
पृष्ठ : 4 मूल्य : 1 रुपया
RNI:UPHIN/2002/09136
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
चेतना लहर
जनपद लखनऊ से प्रकाशित

शिक्षा संवाद को नई दिशा दे रहा "टीचर्स ऑफ बिहार"

संगठन नहीं, विचार बना शिक्षक सशक्तिकरण का मंच

पटना। राज्य की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और वैचारिक चेतना में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार और शिक्षक अधिकारों पर संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया है। टीचर्स ऑफ बिहार की पहचान एक ऐसे शिक्षक समूह के रूप में बन रही है, जो बिना किसी औपचारिक संस्थागत दबाव के सहयोग, अनुभव-साझाकरण और रचनात्मक पहल को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षक डिजिटल माध्यमों के जरिये न केवल अपने नवाचार साझा कर रहे हैं, बल्कि सरकारी विद्यालयों की जमीनी चुनौतियों पर भी गंभीर और सार्थक विमर्श कर रहे हैं।

डिजिटल संवाद से बढ़ी भागीदारी....

मंच की गतिविधियों में ऑनलाइन बैठकें, शैक्षणिक चर्चाएँ और नवाचार आधारित संवाद प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और प्रभावी बना रही है।

सम्मान से अधिक सशक्तिकरण पर जोर....

टीचर्स ऑफ बिहार की विशेषता यह है कि यह मंच औपचारिक सम्मान या पुरस्कार की बजाय शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को महत्व देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान उसके कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से तय होता है।

नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका....

शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधार से संबंधित विषयों पर टीचर्स ऑफ बिहार समय-समय पर अपने विचार सार्वजनिक करता रहा है। इससे यह मंच शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच संवाद की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की संभावनाएँ....

शैक्षणिक जानकारों के अनुसार, यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित हो रहा है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों के विचार....

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है। वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर संवाद, नवाचार और सहयोग के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में रचनात्मक बदलाव की दिशा में कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष....

कुल मिलाकर, टीचर्स ऑफ बिहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा में परिवर्तन केवल नीतियों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की जागरूक भागीदारी, संवाद और नवाचार से संभव है। यह मंच शिक्षकों को संगठित करने के साथ-साथ उन्हें सोचने, बोलने और बदलाव का नेतृत्व करने का अवसर दे रहा है। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को निरंतर समर्थन और सकारात्मक दिशा मिलती रही, तो बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था आने वाले वर्षों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के नए मानक स्थापित कर सकती है। टीचर्स ऑफ बिहार आज एक संगठन नहीं, बल्कि शिक्षा परिवर्तन का साझा संकल्प बन चुका है, जहाँ शिक्षक स्वयं बदलाव के सूत्रधार हैं।

बिहार की शिक्षा में उभरती नई आवाज़ : 'टीचर्स ऑफ बिहार'

पूर्वांचल राज्य

पटना। बिहार की स्कूली शिक्षा व्यवस्था में बीते कुछ वर्षों के दौरान एक शांत लेकिन असरदार बदलाव देखने को मिला है। यह बदलाव न तो किसी सरकारी आदेश से आया है और न ही किसी बड़े संस्थागत ढांचे से, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी, वैचारिक चेतना और आपसी संवाद से जन्मा है। इसी बदलाव की पृष्ठभूमि में टीचर्स ऑफ बिहार एक ऐसे मंच के रूप में उभरा है, जिसने शिक्षा संवाद को नई दिशा दी है।

टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों को केवल कक्षा-कक्ष और पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर शिक्षा नीति, नवाचार, शिक्षक अधिकार और विद्यालयी चुनौतियों पर खुलकर विचार रखने का मंच प्रदान किया है। यह मंच धीरे-धीरे एक संगठन से आगे बढ़कर शिक्षा परिवर्तन के साझा विचार के रूप में स्थापित होता जा रहा है।

डिजिटल माध्यम बना संवाद की रीढ़

टीचर्स ऑफ बिहार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी डिजिटल सक्रियता है। ऑनलाइन बैठकों, शैक्षणिक चर्चाओं और नवाचार-आधारित संवादों के माध्यम से राज्य के दूरस्थ और ग्रामीण इलाकों में कार्यरत शिक्षक भी मुख्यधारा के शैक्षणिक विमर्श से जुड़ पा रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार की सहभागिता शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सहभागी और व्यावहारिक बना रही है।

सम्मान नहीं, सशक्तिकरण पर फोकस

यह मंच औपचारिक सम्मान, पुरस्कार या पद की राजनीति से दूर रहकर शिक्षक की व्यावसायिक गरिमा, अधिकार और कार्य की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है। मंच से जुड़े शिक्षकों का स्पष्ट मानना है कि शिक्षक का वास्तविक सम्मान मंचों पर नहीं, बल्कि कक्षा में किए गए नवाचार और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में दिखाई देता है।

नीतिगत मुद्दों पर भी मुखर भूमिका

टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षा से जुड़े नीतिगत निर्णयों, शिक्षक हितों और विद्यालयी सुधारों पर समय-समय पर अपनी राय सार्वजनिक की है। इससे यह मंच केवल संवाद तक सीमित न रहकर शिक्षक और नीति-निर्माण के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में भी उभर रहा है।

भविष्य की दिशा और संभावनाएँ

शैक्षणिक जानकारों का मानना है कि यदि ऐसे शिक्षक-आधारित मंचों को रचनात्मक और सकारात्मक समर्थन मिलता रहा, तो यह बिहार की शिक्षा व्यवस्था में स्थायी और सार्थक परिवर्तन का मजबूत आधार बन सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार आज एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ शिक्षक केवल श्रोता नहीं, बल्कि परिवर्तन के सक्रिय भागीदार हैं।

पदाधिकारियों की राय

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार और टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि यह मंच शिक्षकों की सामूहिक शक्ति और सकारात्मक सोच का परिणाम है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण को मजबूती देना है।